शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अगस्त 2026
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

भारतीय ज्ञान परंपरा के आलोक में प्रेमचंद की कहानियों के पात्रों में धर्म, कर्म और नैतिक द्वंद्व

सहायक प्राध्यापक (हिंदी विभाग)
सुराना कॉलेज (स्वायत्त)
बेंगलुरु, कर्नाटक, भारत

शोध संक्षेप

भारतीय ज्ञान परंपरा का मूल आधार धर्म, कर्म, सत्य, न्याय, लोकमंगल एवं नैतिक मूल्य हैं। यहाँ धर्म का अर्थ केवल धार्मिक अनुष्ठानों अथवा किसी विशेष जाति संप्रदाय या मत से संबंधित संकीर्ण अवधारणा नहीं बल्कि कर्तव्य, न्याय, सदाचार, सत्य, नैतिक उत्तरदायित्व तथा लोकहित से है। प्रेमचंद का कथा.साहित्य भारतीय समाज के यथार्थ का सजीव दस्तावेज़ होने के साथ-साथ जीवन.मूल्यों का प्रभावशाली प्रतिपादन भी करता है। उनके पात्र व्यक्तिगत स्वार्थ, पारिवारिक संबंधों, सामाजिक अपेक्षाओं और नैतिक दायित्वों के बीच उत्पन्न संघर्ष से गुजरते हैं, जिससे धर्म, कर्म और नैतिक द्वंद्व का स्वरूप स्पष्ट होता है। इस शोध पत्र में भारतीय ज्ञान परंपरा के आलोक में प्रेमचंद की चयनित कहानियों के प्रमुख पात्रों 'मंत्र' के बूढ़े भगत, 'नमक का दारोगा' के मुंशी वंशीधर 'पञ्च परमेश्वर' के अलगू चौधरी एवं जुम्मन शेख तथा 'दो बैलों की कथा' के हीरा के माध्यम से धर्म, कर्म और नैतिक द्वंद्व का विश्लेषण किया गया है। इन पात्रों के माध्यम से यह स्पष्ट किया गया है कि वे केवल सामाजिक यथार्थ के प्रतिनिधि नहीं, बल्कि भारतीय ज्ञान परंपरा के नैतिक आदर्शों के संवाहक भी हैं। उनके निर्णयों, आचरण और नैतिक संघर्षों में धर्म, कर्म, सत्य, न्याय, करुणा तथा लोकमंगल जैसे भारतीय ज्ञान परंपरा के मूल जीवनमूल्य विविध रूपों में अभिव्यक्त होते हैं।

बीज शब्द : *भारतीय ज्ञान परंपरा, प्रेमचंद की कहानियाँ, धर्म, कर्म, नैतिक द्वंद्व, नैतिकता, लोकमंगल की भावना।*

प्रस्तावना

हिंदी साहित्य में मुंशी प्रेमचंद का स्थान युगप्रवर्तक कथाकार के रूप में स्थापित है। प्रेमचंद को अपने जीवनकाल में ही कथाकार के रूप में अपार मान्यता मिली। उनकी प्रतिष्ठा का इतना विस्तार हुआ कि विश्व कथा. साहित्य के सर्वोच्च शिखर पर पहुँच गए और कथा साम्राट की तरह स्थापित हुए। प्रेमचंद की कहानियाँ काल की सीमा में आबद्ध नहीं हुई आज भी उनकी कहानियाँ प्रासंगिक बनी हुई है। उनका कथा-साहित्य भारतीय ज्ञान परंपरा धर्म, कर्म, सत्य, न्याय और लोकमंगल जैसे सिद्धांतों पर आधारित है, जिनका उद्देश्य व्यक्ति और समाज के बीच संतुलन तथा नैतिक जीवन की स्थापना करना है। प्रेमचंद के पात्र जीवन की जटिल परिस्थितियों में कर्तव्य, स्वार्थ, न्याय और मानवीय मूल्यों के बीच संघर्ष करते हैं। इसलिए उनके पात्रों का अध्ययन भारतीय ज्ञान परंपरा के आलोक में धर्म, कर्म और नैतिक द्वंद्व की अवधारणा को समझने के लिए विशेष रूप से उपयुक्त है।

भारतीय ज्ञान परंपरा : वैचारिक आधार

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अगस्त 2026
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

भारतीय ज्ञान परंपरा विश्व की प्राचीनतम एवं समृद्ध ज्ञानपरंपरा है, जिसका मूल आधार वेद, उपनिषद, महाभारत, रामायण तथा अन्य दार्शनिक ग्रंथ हैं। यह परंपरा केवल सैद्धांतिक ज्ञान तक सीमित न होकर जीवन को मूल्यपरक, संतुलित और लोक कल्याणकारी बनाने पर बल देती है। भारतीय ज्ञान परंपरा में प्रकृति और मानव के सह.अस्तित्वए पंचतत्त्व, करुणा, सहिष्णुता, समन्वयए, आत्मानुशासन तथा नैतिक जीवन को विशेष महत्व दिया गया है। इसी कारण भारतीय साहित्य भी इन जीवन-मूल्यों से अनुप्राणित रहा है। हिंदी साहित्यए विशेषतः प्रेमचंद का कथा-साहित्य, इन मानवीय और सांस्कृतिक मूल्यों को पात्रों के जीवन.संघर्ष तथा आचरण के माध्यम से प्रभावी रूप में अभिव्यक्त करता है।

धर्म

धर्म शब्द संस्कृत की 'धृ' धातु से बना है, जिसका अर्थ है धारण करना, संरक्षण करना। वैदिक साहित्य, उपनिषद तथा मनुस्मृति में धर्म को व्यक्ति के कर्तव्य, आचार-विचार और समाज में संतुलन स्थापित करने वाले सिद्धांत के रूप में स्वीकार किया गया है। मनुस्मृति के अनुसार राग-द्वेष से रहित विद्वानों द्वारा जिसका आचरण किया जाए और जिसे अंतःकरण स्वीकार करे, वही धर्म है। इस प्रकार भारतीय ज्ञान परंपरा में धर्म जीवन को नैतिक, उत्तरदायी और लोकहितकारी बनाने वाला मूल सिद्धांत है।

कर्म

कर्म शब्द संस्कृत की 'कृ' धातु से बना है, जिसका अर्थ है कार्य करना या क्रिया करना। भारतीय दर्शन के अनुसार शरीर, मन और वाणी द्वारा किया गया प्रत्येक सचेत कार्य कर्म कहलाता है। भगवद्गीता में निष्काम कर्म का सिद्धांत प्रतिपादित करते हुए कर्तव्य पालन को सर्वोच्च माना गया है। अतः कर्म का वास्तविक अर्थ केवल कार्य करना नहीं, बल्कि नैतिकता, उत्तरदायित्व और लोकहित की भावना से अपने कर्तव्य का पालन करना है।

नैतिकता

भारतीय ज्ञान परंपरा में नैतिकता का आधार सत्य, करुणा, प्रामाणिकता, आत्मसंयम तथा लोकमंगल है। नैतिक व्यक्ति वही है जो कठिन परिस्थितियों में भी सत्य और न्याय का मार्ग नहीं छोड़ता। प्रेमचंद के पात्रों के जीवन.संघर्ष में यही नैतिकता विविध रूपों में अभिव्यक्त होती है।

प्रेमचंद के पात्रों में धर्म, कर्म और नैतिक द्वंद्व : भारतीय ज्ञान परंपरा के आलोक में

प्रेमचंद के कथा-साहित्य के पात्र भारतीय समाज के विविध जीवन-मूल्यों के प्रतिनिधि हैं। उनके चरित्रों में धर्म, कर्म तथा नैतिक द्वंद्व जीवन की विभिन्न परिस्थितियों में विविध रूपों में अभिव्यक्त होते हैं। भारतीय ज्ञान परंपरा के आलोक में इन पात्रों का अध्ययन उनके नैतिक व्यक्तित्व, कर्तव्यबोध तथा सामाजिक उत्तरदायित्व को समझने में सहायक सिद्ध होता है। प्रस्तुत लेख में चयनित कहानियों के प्रमुख पात्रों के माध्यम से धर्म, कर्म और नैतिक द्वंद्व की अभिव्यक्ति का विश्लेषण निम्नानुसार प्रस्तुत किया गया है :

पंच परमेश्वर : अलगू चौधरी एवं जुम्मन शेख : पंच परमेश्वर में प्रेमचंद ने धर्म को न्याय और कर्तव्य के रूप में प्रस्तुत किया है। जब अलगू चौधरी को बूढ़ी खाला और जुम्मन शेख के विवाद में पंच बनाया

जाता है, तब उनके सामने मित्रता और न्याय, दोनों में से किसी एक को चुनने का प्रश्न होता है। भारतीय ज्ञान परंपरा के अनुसार धर्म का पालन करते हुए वे मित्रता से ऊपर उठकर निष्पक्ष निर्णय देते हैं।

"शेख जुम्मन ! हम और तुम पुराने दोस्त है! जब काम पड़ा, तुमने हमारी मदद की और हम भी जो कुछ बन पड़ा तुम्हारी सेवा करते रहे हैं, मगर इस समय तुम और बूढ़ी ख़ाला दोनों हमारी निगाह में बराबर हो।"1

यह संवाद स्पष्ट करता है कि पंच के पद पर बैठने के बाद अलगू के लिए व्यक्तिगत संबंधों से अधिक महत्वपूर्ण धर्म अर्थात् न्याय है। इसी प्रकार जब बाद में जुम्मन शेख स्वयं पंच बनते हैं, तब उनके सामने अलगू से बदला लेने का अवसर होता है। किंतु पंच का दायित्व स्वीकार करते ही उनमें भी 'धर्मबोध' जागृत हो जाता है और वह कहता है :

"भैया, जब से तुमने मेरी पंचायत की तब से मैं तुम्हारा प्राण घातक शत्रु बन गया था, पर आज मुझे ज्ञात होता हुआ कि पंच के पद पर बैठकर न कोई किसी का दोस्त होता है न दुश्मन"2 इस कथन से स्पष्ट होता है कि पंच का धर्म निष्पक्ष न्याय करना है। मनुस्मृति में कहा गया है 'धर्मो रक्षति रक्षितः"3 अर्थात् जो धर्म की रक्षा करता है धर्म उसकी रक्षा करता है।

अलगू और जुम्मन दोनों व्यक्तिगत स्वार्थ से ऊपर उठकर अपने स्वधर्म (कर्तव्य) का पालन करते हैं। उनका निर्णय केवल एक व्यक्ति के हित में नहीं, बल्कि लोकमंगल और न्याय की स्थापना के लिए होता है। यही भारतीय ज्ञान परंपरा के धर्म का वास्तविक स्वरूप है।

दो बैलों की कथा : हीरा

प्रेमचंद की 'दो बैलों की कथा' में हीरा और मोती केवल पशु नहीं, बल्कि भारतीय ज्ञान परंपरा के धर्म, मर्यादा, कर्तव्यनिष्ठा और नैतिक आचरण के जीवंत प्रतीक हैं। वे विपरीत परिस्थितियों, अत्याचार और अपमान का सामना करते हुए भी अपने धर्म का परित्याग नहीं करते। प्रेमचंद ने उनके माध्यम से यह प्रतिपादित किया है कि सच्चा धर्म प्रतिशोध नहीं, बल्कि संयम, कर्तव्य और सदाचार में निहित है। जब गया बैलों पर अत्याचार करता है, तब मोती क्रोधित होकर प्रतिकार करना चाहता है, किंतु हीरा उसे समझाते हुए कहता है "नहीं हमारी जाति का यह धर्म नहीं है ।"4

यह संवाद भारतीय ज्ञान परंपरा के उस आदर्श को व्यक्त करता है जिसमें धर्म का अर्थ है एक मर्यादित आचरण और नैतिक कर्तव्य है। इसी प्रकार जब हीरा और मोती गाँव से भागकर दूसरी जगह पहुँच जाते है तो मोती कहता है कि वहीं उसे मार गिराना था तब हीरा पुनः कहता है "उसे मार गिराते तो दुनिया क्या कहती ? वह अपने धर्म छोड़ दे, लेकिन हम अपना धर्म क्यों छोड़ें ?"5 यह कथन स्पष्ट करता है कि दूसरे के अधर्म के कारण स्वयं धर्म का परित्याग करना भारतीय संस्कृति का आदर्श नहीं है। धर्म का पालन परिस्थितियों पर नहीं, बल्कि व्यक्ति के चरित्र पर निर्भर करता है।

'दो बैलों की कथा' प्रेमचंद की ऐसी प्रतीकात्मक कहानी है जिसमें पशु पात्रों के माध्यम से भारतीय ज्ञान परंपरा के नैतिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों को अभिव्यक्त किया गया है। हीरा और मोती केवल बैल नहीं हैं, बल्कि वे कर्तव्यनिष्ठा, मित्रता, करुणा, सह-अस्तित्व जैसे आदर्शों के प्रतीक हैं। प्रेमचंद ने यह सिद्ध किया

है कि वास्तविक धर्म किसी विशेष समुदाय या मनुष्य तक सीमित नहीं है, बल्कि प्रत्येक संवेदनशील प्राणी के आचरण में भी प्रकट हो सकता है।

कर्म

'नमक का दारोगा' : मुंशी वंशीधर

प्रेमचंद की कहानी 'नमक का दरोगा' के पात्र मुंशी वंशीधर भारतीय ज्ञान परंपरा के कर्तव्यनिष्ठ और निष्काम कर्म के लिए एक सशक्त उदाहरण है। कहानी का नायक मुंशी वंशीधर अपने सरकारी पद को केवल नौकरी नहीं, बल्कि कर्तव्य मानता है। जब प्रभावशाली और धनी पंडित अलोपीदीन उसे रिश्वत देकर अपने अवैध नमक व्यापार को बचाना चाहते हैं, तब भी वंशीधर अपने कर्तव्य से विचलित नहीं होता किन्तु वंशीधर अपने दायित्व का पालन करते हुए स्पष्ट उत्तर देता है "हम उन नमक हरामों में नहीं हैं, जो कौड़ियों पर अपना ईमान बेचते फिरते हैं। आप इस समय हिरासत में हैं।"6 यह संवाद बताता है कि वंशीधर के लिए कर्तव्य, ईमानदारी और न्याय किसी भी धन-संपत्ति से अधिक मूल्यवान है। वह परिणाम, पदोन्नति या दंड की चिंता किए बिना अपने कर्म का पालन करता है। भारतीय ज्ञान परंपरा में श्रीमद्भगवद्गीता में कहा गया है :

"तस्मादसक्तः सततं कार्यं कर्म समाचर।
असक्तो ह्याचरन् कर्म परमाप्नोति पुरुषः॥7

अर्थात आसक्ति का त्याग करके निरंतर अपने कर्तव्यरूपी कर्म का पालन करो, क्योंकि आसक्ति रहित होकर कर्म करने वाला मनुष्य परम लक्ष्य को प्राप्त करता है। वंशीधर इसी आदर्श का पालन करते हैं। वे धन, भय और लोभ से अप्रभावित रहकर अपने कर्तव्य-कर्म को सर्वोपरि मानते हैं। तत्काल उन्हें कठिनाइयों और अपमान का सामना करना पड़ता है, परंतु अंततः उनकी सत्यनिष्ठा और कर्मनिष्ठा से प्रभावित होकर स्वयं पंडित अलोपीदीन उन्हें अपने विशाल व्यवसाय का स्थायी प्रबंधक नियुक्त करते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि प्रामाणिक कर्म अंततः सम्मान और विश्वास का आधार बनता है। इस प्रकार वंशीधर पात्र भारतीय परंपरा के कर्मयोग के तत्व को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करता है।

नैतिक द्वंद्व

'मंत्र' : बूढ़ा भगत

प्रेमचंद की 'मंत्र' कहानी का पात्र बूढ़ा भगत भारतीय ज्ञान परंपरा के नैतिक मूल्यों का अत्यंत सशक्त उदाहरण है। इस कहानी का केंद्रीय बिंदु प्रतिशोध और मानवता के बीच उत्पन्न नैतिक द्वंद्व है। मंत्र कहानी का बूढ़े भगत के सामने एक ओर अपने पुत्र की मृत्यु का असहनीय दुःख और डॉ चड्ढा के प्रति आक्रोश है, तो दूसरी ओर एक संकटग्रस्त युवक के प्राण बचाने का नैतिक दायित्व है। प्रेमचंद लिखते हैं, "चेतना रोकती थी, उपचेतना ठेलती थी, सेवक स्वामी पर हावी हो गया।"8 इस संदर्भ में भगवद्गीता का यह श्लोक अत्यंत उपयुक्त है :

"अद्वेष्टा सर्वभूतानां मैत्रः करुण एव च।
निर्ममो निरहंकारः सम दुःख सुखः क्षमी॥'9

इसका अर्थ है जो सभी प्राणियों के प्रति द्वेषरहित, मित्रवत, करुणामय, ममतारहित, अहंकार रहित तथा क्षमाशील है, वही श्रेष्ठ पुरुष है। इस प्रकार 'मंत्र' कहानी में यह दर्शाया गया है कि नैतिक द्वंद्व में

व्यक्ति को स्वार्थपरता और नैतिक कर्तव्य के बीच एक को चयन करना कठिन होता है। वास्तविक नैतिकता वही है, जिसमें व्यक्ति व्यक्तिगत पीड़ा और स्वार्थ से ऊपर उठकर लोकमंगल तथा मानव-कल्याण को सर्वोच्च स्थान देता है, यही गुण प्रेमचंद ने 'बूढ़े भगत' पात्र के माध्यम से सिद्ध किया है।

नमक का दरोगा : मुंशी वंशीधर

प्रेमचंद की कहानी 'नमक का दरोगा' का केंद्रीय विषय कर्तव्य और प्रलोभन के बीच उत्पन्न नैतिक द्वंद्व है। कहानी का नायक मुंशी वंशीधर एक ईमानदार सरकारी अधिकारी है, जिसके सामने एक ओर अपने पद का दायित्व है और दूसरी ओर धन, प्रभाव तथा व्यक्तिगत लाभ का आकर्षण है। जब धनी व्यापारी पंडित अलोपीदीन अवैध रूप से नमक ले जाते हुए पकड़े जाते हैं तब वे वंशीधर को भारी रिश्वत देकर अपने अपराध को छिपाने का प्रयास करते हैं। किंतु वंशीधर धन के प्रलोभन में न पड़कर अपने कर्तव्य का पालन करते हैं और अलोपीदीन को गिरफ्तार कर लेते हैं। यह घटना उनके जीवन के सबसे बड़े नैतिक द्वंद्व को प्रस्तुत करती है, जहाँ उन्हें ईमानदारी और भ्रष्टाचारए सत्य और स्वार्थ में से किसी एक का चयन करना होता है। इस संदर्भ में प्रेमचंद लिखते हैं, "आज उन्हें संसार का एक खेद जनक विचित्र अनुभव हुआ। न्याय और विद्वत्ता, लम्बी चौडी उपाधियाँ, बड़ी-बड़ी दाढ़ियाँ और ढ़ीले चोंगे सच्चे आदर का पात्र नहीं है।"10 इस संदर्भ में भगवद्गीता का यह श्लोक अत्यंत उपयुक्त है :

"श्रेयान् स्वधर्मो विगुणः परधर्मात् स्वनुष्ठितात् ।
स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः॥"11

इसका अर्थ है अपना कर्तव्य चाहे उसमें कठिनाइयाँ हों, दूसरों के आकर्षक मार्ग से श्रेष्ठ है। अपने धर्म का पालन करते हुए कष्ट सहना भी कल्याणकारी है।

वंशीधर पात्र यह संदेश देता है कि वास्तविक नैतिकता वही है, जो प्रलोभन और विपरीत परिस्थितियों में भी सत्य, न्याय और कर्तव्य का परित्याग न करे। मुंशी वंशीधर का चरित्र भारतीय ज्ञान परंपरा के नैतिक आदर्शों और चरित्रबल का उत्कृष्ट उदाहरण है।

समकालीन प्रासंगिकता

आज के भौतिकवादी और प्रतिस्पर्धात्मक समाज में धर्म, कर्म और नैतिकता की आवश्यकता पहले से अधिक है। भारतीय ज्ञान परंपरा सत्य, कर्तव्य, करुणा, निष्काम कर्म और लोक-कल्याण का संदेश देती है। प्रेमचंद की कहानियाँ 'नमक का दरोगा', 'मंत्र', 'दो बैलों की कथा' इन्हीं मूल्यों को व्यावहारिक रूप में प्रस्तुत करती है। ये कहानियाँ आज भी प्रामाणिकता, मानवता, कर्तव्यनिष्ठा और नैतिक आचरण की प्रेरणा देती हैं तथा सिद्ध करती हैं कि भारतीय ज्ञान परंपरा के जीवन.मूल्य समकालीन समाज में समान रूप से प्रासंगिक और उपयोगी हैं।

निष्कर्ष

प्रेमचंद के कथा-साहित्य के पात्र भारतीय ज्ञान परंपरा के मूल जीवन-मूल्यों के सशक्त प्रतिनिधि हैं। उनके चरित्रों के निर्णय धर्म, कर्म और नैतिकता पर आधारित हैं, जो केवल व्यक्तिगत आदर्श नहीं बल्कि सामाजिक उत्तरदायित्व की भी अभिव्यक्ति है। प्रेमचंद नैतिक द्वंद्व के माध्यम से भारतीय समाज की यथार्थ समस्याओं का चित्रण करते हुए यह प्रतिपादित करते हैं कि सत्य, कर्तव्य, करुणा, निष्काम कर्म

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अगस्त 2026
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

और लोकमंगल जैसे मूल्य जीवन के स्थायी आधार हैं। उनके कथा.पात्र कठिन परिस्थितियों में भी नैतिक आचरण का मार्ग अपनाकर भारतीय ज्ञान परंपरा की जीवन-दृष्टि को मूर्त रूप प्रदान करते हैं। इस प्रकार प्रेमचंद का कथा-साहित्य सामाजिक यथार्थ और नैतिक आदर्शों के मध्य विद्यमान द्वंद्व का सशक्त चित्रण करते हुए भारतीय ज्ञान परंपरा के जीवनमूल्यों की समकालीन प्रासंगिकता को प्रमाणित करता है।

पाद टिप्पणियाँ

1 प्रेमचंद, प्रेमचंद की संपूर्ण कहानियाँ खंड 2 .पृष्ठ 484

2 प्रेमचंद, प्रेमचंद की संपूर्ण कहानियाँ खंड 2 .पृष्ठ 489

3 महाभारत का वन पर्व, अध्याय 313, श्लोक संख्या 128

4 प्रेमचंद, प्रेमचंद की 51 अनमोल कहानियाँ, दो बैलों की कथा, पृष्ठ 234

5 प्रेमचंद, प्रेमचंद की 51 अनमोल कहानियाँ, दो बैलों की कथा, पृष्ठ 236

6 प्रेमचंद, प्रेमचंद की संपूर्ण कहानियाँ खंड 2, पृष्ठ 742

7 श्रीमद्भगवद्गीता 3, अध्याय (कर्मयोग) का १९वां श्लोक

8 प्रेमचंद, किशोर साहित्य माला, रामलीला और अन्य कहानियाँ, पृष्ठ 40

9 श्रीमद्भगवद्गीता के 12वें अध्याय (भक्तियोग) का श्लोक 13

10 प्रेमचंद, प्रेमचंद की संपूर्ण कहानियाँ खंड 2, पृष्ठ 745

11 श्रीमद्भगवद्गीता के 3 अध्याय (कर्मयोग) का 35वां श्लोक

संदर्भ ग्रंथ

1 प्रेमचंद, किशोर साहित्य माला 5, रामलीला और अन्य कहानियाँ, हंस प्रकाशन

2 प्रेमचंद, प्रेमचंद की संपूर्ण कहानियाँ खंड 2, लोकभरती प्रकाशन

3 प्रेमचंद, प्रेमचंद की श्रेष्ठ कहानियाँ, हिन्द पॉकेट बुक्स

4 प्रेमचंद, प्रेमचंद की 51 अनमोल कहानियाँ, मनोज पब्लिकेशन्स, 10वां संस्करण

5 प्रेमचंद, मानसरोवर भाग 1, सरस्वती प्रेस बनारस

6 श्री जयदयालजी गोयंदका, श्रीमद्भगवद्गीता, गीता प्रेस गोरखपुर

7 प्रेमचंद की कहानियों का महत्व

8 प्रेमचंद की कहानियों में संवेदना तत्व, भवानी दास.

9 दिल छू लेने वाली प्रेमचंद की कहानियाँ